International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

पं. रमाबाई सरस्वती : महाराष्ट्र महिला सुधार आंदोलन में भूमिका

डॉ. एकता सिंह

मन्दसौर (म.प्र.)

भारतीय इतिहास में अग्रणी एवं महिला जनजागरण की पुरोधा युग की प्रतिमूर्ति रमाबाई (1858–1922) एक दैदिप्यमान नक्षत्र थी। जिन्होने महिला सुधार आंदोलन में नींव के पत्थर की भाँति कार्य किया। रमाबाई के क्रियाकलापों में नारी जागरण की प्रक्रिया प्रारंभ हो गयी थी, जिसके परिणामस्वरूप जागरूकता आयी। महाराष्ट्र के महिला सुधार आंदोलन में रमाबाई की महत्वपूर्ण भूमिका रही। रमाबाई ने आर्य महिला समाज की स्थापना कर महिलाओं को उनके अधिकार के प्रति सचेत करने का प्रथम प्रयास किया। विधवाओं को मनुष्यों के समान जीने का अधिकार देने के लिये 'शारदा–सदन' की स्थापना की। रमाबाई ने दो स्मरणीय कार्य किये जिन्हे भुलाया नहीं जा सकता। एक हंटर कमीशन के सामने गवाही एवं दूसरी स्त्री धर्म नीति पर पुस्तक। इस पुस्तक की खूब बिक्री हुई। मराठी में छिटपुट आलोचना के बाद भी किताब को लोगों ने सराहा। इसी बीच रमाबाई के मन में इंग्लैण्ड जाकर पढ़ाई करने एवं स्त्रियों की शिक्षा के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानने का विचार आया। इंग्लैण्ड में सैंट मेरिज होम से निमंत्रण मिलने के बाद रमाबाई कुछ दिनों तक सैंट मेरिज होम में रही। सैंट मेरिज होम में रहने के कुछ दिन बाद वहाँ की समीति ने रमाबाई को फुलहम भेजा।यह उन्हीं की एक शाखा थी और समाज से बहिष्कृत स्त्रियों के लिए 'उद्धार गृह' था। 29 सितम्बर 1883 को रमाबाई ने ईसाई–धर्म स्वीकार किया।

'इन्दुप्रकाश' ने भी रमाबाई के उत्साह और कर्मनिष्ठता की बहुत प्रशंसा की –''छः वर्ष विदेश में रहकर और हिन्दू धर्म बदलकर ईसाई बनकर भारत आयी, इस महिला का कार्य के प्रति लोगों के मन में सराहना और आश्चर्य का भाव था। पवित्र भाषाओं के अध्येता, ऋग्वेद भाष्य के प्रकाशक मेक्समूलर ने रमाबाई के कार्य के विषय में प्रशंसात्मक वचन कहते हुए लिखा है– ''रमाबाई को यदि एक भी बाल विधवा की सहायता करने का अवसर मिलता और यदि उनके पंख होते तो अवश्य ही वे उस बाल विधवा के लिये भारत पहुंच जाती।''

मेक्समूलर की भविष्यवाणी सचमुच सत्य हुई है। रमाबाई ने विधवाओं की शिक्षा अध्ययन की नीव रख दी है। सदन का नाम 'शारदा–सदन' रखा गया। दिसंबर 1889 को न्यूयार्क में प्रकाशित क्रिश्चियन वीकली में शारदा सदन की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत हुई। तिलक यह रिपोर्ट पढकर सावधान हो गये ओर 'केसरी' ने सदन पर प्रहार तेज कर दिये। केसरी ने लिखा कि सदन में विधवा शिक्षा की आड़ में धर्म परिवर्तन किया जा रहा है। विधवाओं को ईसाई धर्म के प्रति आकर्षित किया जा रहा है। रमाबाई महिलाओं को पुरूषों के समान अधिकार दिलाने की पक्षधर थी। रमाबाई का मानना था कि नवीन राजनीतिक व्यवस्था की स्थापना, आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा पद्धति ओर चिंतन शैलियों के प्रसार आदि के फलस्वरूप ही भारत में सामाजिक जागरूकता आयेगी।

19 वीं सदी के पुरूष शास्त्रों ओर पुराणों का हवाला देकर पतिव्रत धर्म की वकालात करते थे। रमाबाई ने उन शास्त्रों ओर पुराणों को ही चुनोती दी। रमाबाई ने अपनी आलोचनात्मक दृष्टि से 19 वीं सदी के भारतीय इतिहास के एक महत्वपूर्ण मुद्दे राष्ट्रवाद बनाम सुधारवाद के द्वंद को बेनकाब किया और ऐसा करनेवाली यह पहली भारतीय स्त्री थी। प्राचीन ग्रंथो के 18 हजार श्लोक मुखोदगत एवं उसके व्याकरण का नैपुण्य देखकर कलकत्ता के सिनेट हाल में यहां के पंडितों ने रमाबाई को 'सरस्वती' की उपाधि दी। इसके पूर्व या बाद में पंडिता नाम से कोई दूसरी महिला विख्यात नही हुई।

पंडिता रमाबाई ने बहुत प्रयास कर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में महिला प्रतिनिधित्व प्राप्त किया। कांग्रेस के पांचवे अधिवेशन में 15 ठहराव प्रस्तावों में एक भी प्रस्ताव स्त्रीदास्य विमोचन या किसी सामाजिक विषय पर नही था। रमाबाई ने उसी दिन होने वाली सोश्यल कांफ्रेंस की सभा में सामाजिक विषय पर भाषण दिया। उपरोक्त प्रस्ताव पर रमाबाई का भाषण हुआ। सोश्यल कांफ्रेंस की रिपोर्ट में टाईम्स ने उनके भाषण का सारांश दिया था।

कांग्रेस ने महिलाओं को प्रतिनिधित्व का प्रथम प्रयास रामबाई सोश्यल काफ्रेंस में चार हजार पुरूषों में खडे होकर केशवपन विरोधी प्रस्तुत प्रस्ताव को समर्थन करते हुए समाज को हिलाकर रख दिया।

पूणे के प्लेग को प्रकोप में जिस लेख ने ब्रिटिश संसद में भारतीय जनमत की आवाज उठाई वह ज्वलंत लेख रमाबाई का था। इसी लेख से आपका मुंबई के गवर्नर से विवाद हुआ। रमाबाई नें मुंबई में अमेरिका संबंधी भाषण दिया उसका समाचार केवल 'केसरी' के अलावा किसी अन्य अखबार ने नही दिया। रमाबाई के भाषण में एक जगह उल्लेख है, 'स्वदेशाभिमान केसा हो' इस विषय में भारत के स्कूल में कुछ भी नही पढाया जाता। भारत की पुस्तकें भी शिक्षा देने योग्य नही है। यहां की पुस्तक का मुख्य कार्य सरकार की भक्ति करना है। रमाबाई ने लगभग 125 वर्ष पूर्व हिन्दी राष्ट्रभाषा होना चाहिये यह मांग ''यूनाईटेड स्टेट्स की लोक स्थिति ओर प्रवास व्रत'' पुस्तक में उठाई थी। रमाबाई का एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कार्य उनके प्रयास से कांग्रेस में स्त्री प्रतिनिधियों का प्रवेश, रमाबाई मद्यपान निषेध महिला मण्डल की सक्रिय सदस्य थी। आपने इस आंदोलन में अमेरिका में सहयोग दिया था। इसी कारण उनके प्रोत्साहन से यहा ''मद्यनिषेधक महिला समाज'' स्थापित किया गया।

युवा स्वदेशी महिलाओं को औद्योगिक प्रशिक्षण देने के लिये ''वूमन्स टेक्नीकल एज्यूकेशन एसोशिएसन'' की स्थापना की जो परित्यक्ता गरीब विधवा अनाथ आश्रम की महिला, अन्य बेसहारा जो ईमानदार व्यवसाय के अभाव में बुरे मार्ग को जाती है, को निःशुल्क प्रशिक्षण देती थी। लार्ड रिपन नें भारत आते ही 1882 को विलियम हन्टर की अध्यक्षता में पहले भारतीय शिक्षा आयोग का गठन किया। रमाबाई इस अवसर पर मुख्य वक्ता थी। रमाबाई को अच्छी अंग्रेजी नही आती थी अतः उनकी गवाही मराठी में हुई, किन्तु आपकी गवाही का सर विलियम हन्टर पर इतना प्रभाव पड़ा कि आपने उस गवाही का अंग्रेजी में अनुवाद करवाकर छपवाया। हन्टर कमीशन के सामने स्त्री चिकित्सकों के बाबत उनके निवेदन में ब्रिटिश साम्राज्ञी का ध्यान आकर्षित कर लिया और हिन्दुस्तान में अप्रत्यक्ष तोर पर एक आंदोलन का जन्म हुआ जो कि अपने नवीनतम विकास के साथ ''द नेशनल एसोसिएशन फार सप्लाइंग फिमेल मेडिकल एण्ड टू द वूमन आफ इण्डिया'' के रूप में पहचान बनाई।

जून 1882 में ही स्त्री धर्म नीति पुस्तक लिखी। इस पुस्तक का प्रथम संस्करण 1882 में प्रकाशित हुआ। पुस्तक की लोकप्रियता को देखते हुए 1883 में द्वितीय संस्करण भी प्रकाशित

किया गया। यह पुस्तक मराठी भाषा में लिखी गई थी और इसका अंग्रेजी शीर्षक था ''moral for women" किताब की खूब बिक्री हुई। 1887 में रमाबाई ने अपनी किताब ''द हाई कास्ट हिन्दू वूमेन'' लिखी। इस पुस्तक को भी लोकप्रियता प्राप्त हुई। इस पुस्तक में हिन्दुस्तानी विधवाओं की समस्याओं का जगजाहिर किया गया ताकि लोग उनके बारे में जान सके। इसी पुस्तक ने अमेरिकन लोगों का ध्यान भारत की ओर आकर्षित किया। इस पुस्तक की अमेरिका में काफी अच्छी बिक्री हुई और रमाबाई को काफी अच्छी आय प्राप्त हुई। इसी पुस्तक के कारण 13 दिसम्बर 1887 को अमेरिका में ''रमाबाई एसोसिएशन'' की स्थापना हुई। जिसने यह तय किया कि भारत मे एक धर्मनिरपेक्ष स्कूल खोला जाय जिसे आगामी 10 वर्ष तक आर्थिक सहायता दी जाय।

भारतीयों के लिये किंडर गार्डन शिक्षा पद्धति और अंधो के लिये ब्रेललिपि से परिचय करवाने का श्रेय रमाबाई को जाता है। रोजगार मूलक प्रशिक्षण लड़को और लड़कियों को देने की वकालात, राष्ट्रभाषा हिन्दी को बनाने की सर्वप्रथम सलाह, प्रथम भारतीय महिला जिसने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बंबई अधिवेशन में महिला प्रतिनिधि के रूप में हिस्सा लिया, 1895 में पूना में फेले प्लेग रोग में सरकार द्वारा किये गये व्यवस्था से नाखुश होकर विरोध प्रकट करना, स्वदेशी आंदोलन में हिस्सा लेकर देश में उत्पादित खादी के वस्त्रों को सारे जीवन अंगीकार करना, भारत में प्रथम महिलागृह की स्थापना, महिलाओं के लिये मेडिकल शिक्षा की पहल करना, हंटर कमीशन के सामने भारतीय महिलाओं में शिक्षा जागृति ओर स्कूल खोलने की पहल करना आदि कार्यो का श्रेंय रमाबाई को जाता है।

रमाबाई ने अपनी अमेरिका यात्रा के दोरान ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया था। पंडिता रमाबाई को 05 अप्रेल 1922 को अंतिम विदाई दी गई। सरोजनी नायडू ने कहा – ''हिन्दू संत मालिका में जिसका नाम रखा जायगा ऐसी इसाई महिला पंडिता रमाबाई थी रविन्द्रनाथ टैगोर ने 1889 में पूना में रमाबाई का व्याख्यान सुनकर पं. रमाबाई की तुलना सफेद गुलाब से की थी। रमाबाई की जीवन गाथा 19 वीं सदी का उत्तरार्द्ध और बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में समाई हुई है। आज हम धर्मातीत मानवता के सपने दोहराते है और आये दिन उसके नारे लगाते है लेकिन आज से सौ सवा सौ साल पहले रमाबाई ने अपनी कृतिशीलता से यह सपना सत्य में बदल दिया। 19

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

वीं सदी के पुरूष प्रधान महाराष्ट्रीयन रंगभूमि पर रमाबाई का एक स्त्री का आगमन एक अनोखी बात थी। जिसकी चमक ने बेसहारा स्त्रियों की अंधेरी जीवन में एक उजाला फैला दिया।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. कार्व्हलो, डॉ. सिसिलिया – पं. रमाबाई बंबई
2. ठाकरे, प्रबोधनकार – पं. रमाबाई सरस्वती
3. तिलक, दे.ना. – महाराष्ट्राचा तेजस्वीन पं. रमाबाई, बंबई
4. बटलर, क्लेमेन टीना – पं. रमाबाई सरस्वती
5. कोशाम्बी मीरा – इंटरसेक्शन सोशल कल्चरल ट्रेंडस इन महाराष्ट्र
6 सेन गुप्ता पद्मिन – पं. रमाबई सरस्वती हर लाईफ एण्ड वर्क दिल्ली
7. मेकनिकल निकोल – पं. रमाबाई सिलेक्टेड वर्कस, कलकत्ता

पता –
एचडीएक्स 16, किटियानी कालोनी,
मन्दसौर (म.प्र.)